जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

जालोर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 | वर्षः 20 | संख्याः 76 | प्रभात | जालोर, सोमवार 23 जून, 2025 | पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 | पृष्ठ 6 | मूल्य 2.50 रु.

युद्ध आरंभ करना आसान हैः पर उस पर नियंत्रण रखना और अपने मन मुताबिक सुनियोजित तरीके से बढ़ाना संभव नहीं है

सवाल यह उठ रहा है कि ईरान के पास न्यूक्लियर सुविधा होना तो बर्दाश्त नहीं हो रहा, पर, पाकिस्तान बार-बार उसके पास न्यूक्लियर हथियार होने की धमकी दे रहा है, उसका क्या?

-अंजन रॉय-
-ऑटवा (कैनडा) से-

ऑटवा, 22 जून। ईरान में परमाणु संवर्धन (न्यूक्लियर एनरिचमैंट) स्थलों पर अमेरिका के हमलों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारी धमाका किया है।

युद्ध शुरू करना आसान है, लेकिन उसे अपनी योजना के अनुसार नियंत्रित और सीमित करना मुश्किल होता है। ईरान पर सीधा हमला कई सैन्य और कूटनीतिक विस्फोटों की श्रृंखला को जन्म देगा।

भारत के लिए तात्कालिक सवाल यह उठता है कि यदि ईरान को परमाणु हथियार रखने की अनुमति नहीं है, तो फिर पाकिस्तान के बारे में क्या, जिसने कई बार भारत के खिलाफ अपने परमाणु हथियारों के उपयोग की धमकियां दी हैं? जबकि, ईरान ने तो बिना परमाणु हथियार के ही इज़रायल के लिए अस्तित्व का खतरा पैदा कर दिया है।

- क्या अमेरिका अब पाकिस्तान के न्यूक्लियर बम को ढूँढ निकालेगा और नष्ट करेगा।
- पाकिस्तान पर यह आरोप भी है कि उसने चोरी छुपे पश्चिमी देशों से न्यूक्लियर टैक्नॉलजी प्राप्त की है और चुपचाप अन्य देशों को बेची भी है।
- और अब पाकिस्तान अन्य देशों को इकट्ठा करके, अमेरिका के ईरान पर अटैक की भर्त्सना करने के लिए उकसा रहा है। इतना ही नहीं, पाकिस्तान ने अमेरिका के सबसे बड़े शत्रु ओसामा-बिन-लादेन को ''सेफ हाउस'' में छुपाकर रखा था।
- अमेरिका के ईरान पर अटैक से इस्लामिक देशों में एक करंट सा फैल गया है और अब इस्लामिक देश संगठित व एकत्रित हो रहे हैं और एक तीसरा ग्रुप तैयार है, इस अंतर्राष्ट्रीय संकट में एक नई भूमिका अदा करने के लिए।
- इन इस्लामिक देशों ने रूस व चीन से संपर्क साधा है, अमेरिका के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा खोलने के लिए। ऐसी भी चर्चा है कि ईरान के विदेश मंत्री रूस से बातचीत करने मॉस्को गये हैं, अपना अगला कदम उठाने से पहले।
- भारत के समक्ष जो दुविधा है, उसका बीच से रास्ता निकालना और निर्णय लेना कोई आसान कूटनीति नहीं है।

ईरान में परमाणु हथियारों के विकास को लेकर उत्पन्न संकट भारत के लिए भी एक प्रकार की दुविधा है। हाल के वर्षों में भारत ने इज़रायल के साथ बहुत घनिष्ठ और महत्वपूर्ण सहयोग

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान ने इज़रायल पर फिर मिसाइल हमले किये

यरूशलम, 22 जून। ईरान की ओर से बैलिस्टिक मिसाइल हमले फिर शुरू करने के बाद मध्य, उत्तरी इजरायल और यरूशलम में सायरन बज उठे। ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल हमले के बाद इजरायल के प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को बंकरों में रहने के निर्देश दिये गये। यह अमेरिका की ओर से ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर हमले के बाद ईरान की ओर से पहला मिसाइल हमला है। एहतियातन इजरायल ने अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया है।

- इज़रायल ने प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को बंकरों में रहने के निर्देश दिये।

इजरायल रक्षा बलों ने एक बयान में बताया कि रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज की मंजूरी और हालात की समीक्षा के बाद, रविवार तड़के 03:45 बजे (स्थानीय समय) से होम फ्रंट कमांड के दिशा-निर्देशों में तत्काल बदलाव किये जायेंगे। इजरायल में होम फ्रंट कमांड के निर्देशों में बदलाव करते हुये पूरे देश में अब केवल जरूरी सेवाएं (जैसे स्वास्थ्य, सुरक्षा, आपातकालीन सेवाएं आदि) ही चालू रखी हैं। निर्देशों में आवश्यक क्षेत्रों को छोड़कर शैक्षिणक गतिविधियों, सभाओं और कार्यस्थलों पर प्रतिबंध शामिल है।

क्या ट्रंप की बमबारी ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम को नष्ट करने में सफल हुई?

संभवतया नहीं, क्योंकि ईरान की न्यूक्लियर सुविधाएँ एक जगह ही केन्द्रित नहीं हैं, ईरान के कई हिस्सों में फैली हुई हैं

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 जून। राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का यह दावा, कि ''हमारा उद्देश्य ईरान की न्यूक्लियर एनरिचमैंट कपैसिटी को नष्ट करना और परमाणु खतरे को समाप्त करना था'', इस बात पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है कि अमेरिकी सैन्य प्रयासों की वास्तविक सफलता क्या है और इस बदलते घटनाक्रम में आगे क्या होगा।

अमेरिकी हमलों ने, जिनमें स्टैल्थ बॉम्बर्स और साइबर ऑपरेशनों का प्रयोग हुआ, ईरान के परमाणु बुनियादी ढांचे के कुछ हिस्सों को नुकसान पहुँचाया हो सकता है, लेकिन इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि तेहरान की एनरिचमैंट कपैसिटी (संवर्धन क्षमता) पूरी तरह नष्ट हो गई है।

ऐसा ही प्रतीत होता है, क्योंकि ईरान का परमाणु कार्यक्रम कई जगहों, जैसे नतांज़, फोर्दो और बुशहर में फैला हुआ है। इनमें से कई ठिकाने भूमिगत या कड़े सुरक्षा कवचों से युक्त हैं, जिस कारण पारंपरिक सैन्य उपायों से पूरे नेटवर्क को निष्क्रिय करना बेहद कठिन हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, ईरान की वैज्ञानिक और तकनीकी वर्कफोर्स अभी भी पूरी तरह सुरक्षित है, जिसका मतलब है कि परमाणु संवर्धन (न्यूक्लियर एनरिचमैंट) दोबारा शुरू करने की विशेषज्ञता और क्षमता अब भी मौजूद है। अभी तक अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने यह प्रमाणित नहीं किया है कि संवर्धन गतिविधियाँ पूरी तरह रुक गई हैं, न ही उसने यह रिपोर्ट दी है कि प्रमुख सेंट्रीफ्यूज इतने क्षतिग्रस्त हो गए हैं कि उन्हें मरम्मत नहीं किया जा सकता।

- इसके अलावा ईरान का साइन्टिफिक व टैक्नोलाजिकल वर्कफोर्स सुरक्षित है। अतः अगर न्यूक्लियर सुविधाओं को भारी हानि भी पहुँची होगी, तब भी टैक्नॉलजी व वर्कफोर्स उपलब्ध होने की वजह से ''यूरेनियम को एनरिच'' करने की प्रक्रिया पुनः शुरु करना ज्यादा मुश्किल नहीं है।
- वैसे भी इंटरनैशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी ने इस बात की जरा भी पुष्टि नहीं की है कि ''यूरेनियम एनरिचमैंट प्रक्रिया'' पूर्णतया थम गई है या ''एनरिचमैंट प्रक्रिया'' के लिए जरूरी सैन्ट्रीफ्यूज़ उपकरण इतने क्षतिग्रस्त हो गए हैं कि उनकी मरम्मत नहीं हो सकती।
- अमेरिका द्वारा न्यूक्लियर सुविधाओं पर की गई भारी बमबारी से एक बात तो सुश्निचित सी लगती है कि ईरान अब ''यूरेनियम एनरिचमैंट'' प्रोग्राम को और तेज करेगा, जिससे पश्चिमी देशों पर और दबाव बने और वो अपनी सार्वभौमिकता (सोवस्ती) को और जोरों से स्थापित कर सके।

इन हमलों ने ज्यादा से ज्यादा ईरान के परमाणु कार्यक्रम को केवल अस्थायी रूप से रोक दिया है या धीमा कर दिया है, लेकिन ये हमले परमाणु कार्यक्रम पर स्थाई रोक नहीं लगा पाए हैं।

जहाँ, ट्रंप के समर्थक इस बमबारी को परमाणु खतरे को रोकने का एक साहसिक कदम कह सकते हैं, वहीं, उनके फैसले ने निस्संदेह देश के भीतर मौजूद प्रबल युद्ध विरोधी भावना को दरकिनार कर दिया है। यह निर्णय एक रणनीतिक चतुराई साबित होगा या राजनीतिक भूल, यह न केवल इस बात पर निर्भर करेगा कि ईरान कैसे प्रतिक्रिया देता है, बल्कि इस पर भी कि आने वाले महीनों में अमेरिकी जनता, सैन्य, आर्थिक और नैतिक असर को किस प्रकार ग्रहण करती है। माना जा रहा है कि अमेरिका एक बहुआयामी रणनीति अपना सकता है। कूटनीतिक रूप से वॉशिंगटन, ईरान को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और अधिक अलग-थलग करने का प्रयास करेगा, अपने सहयोगियों और यहां तक कि यूरोप और खाड़ी देशों जैसे अनिच्छुक भागीदारों पर भी सख्त रूख अपनाने का दबाव बनाकर। इसके साथ ही, ईरान के मिसाइल विकास, रक्षा क्षेत्र, और तेल निर्यात को कमजोर करने के लिए नए प्रतिबंध लागू किए जा सकते हैं, खासकर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

62 आईएएस अधिकारियों के ट्राँसफर

जयपुर, 22 जून। राजस्थान सरकार ने आज 62 आईएएस अधिकारियों के ट्राँसफर आदेश जारी किये। सूचि निम्न अनुसार हैः

- सुबोध अग्रवाल
  अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, राजस्थान वित्त निगम
- अखिल अरोड़ा
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भू जल विभाग
- अपर्णा अरोड़ा
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग एवं पंचायती राज (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता) विभाग
- संदीप वर्मा
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, कौशल एवं उद्यमिता, रोजगार विभाग
- कुलदीप रांका
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग
- आनन्द कुमार
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, वन, पर्यावरण एवं जयवायु परिवर्तन विभाग
- भास्कर आत्माराम सावंत
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, गृह, गृह रक्षा, जेल एवं राजस्थान राज्य अन्वेषण ब्यूरो एवं पदेन मुख्य सतर्कता आयुक्त एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव, आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग
- कुंजी लाल मीणा
  अतिरिक्त मुख्य सचिव, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग
- अजिताभ शर्मा
  प्रमुख शासन सचिव, उर्जा विभाग
- आलोक गुप्ता
  प्रमुख शासन सचिव, उद्योग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम एवं राजकीय उपक्रम एवं दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कोरिडोर एवं विशेषाधिकारी, भिवाडी इन्डीग्रेटेड विकास प्राधिकरण एवं प्रमुख शासन सचिव, विनियोजन एवं अप्रवासी भारतीय एवं निवेश संवर्धन ब्यूरो
- राजेश कुमार यादव
  प्रमुख शासन सचिव, पर्यटन विभाग, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग एवं महानिदेशक, जवाहर कला केन्द्र
- वैभव गालरिया
  प्रमुख शासन सचिव, वित्त, आबकारी एवं कराधान विभाग
- सुबीर कुमार
  प्रमुख शासन सचिव, आयुर्वेद एवं भारतीय चिकित्सा पद्धति विभाग
- भवानी सिंह देथा
  प्रमुख शासन सचिव, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग
- देबाशीष पृष्टी
  प्रमुख शासन सचिव, नगरीय विकास एवं आवासन विभाग

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की आपात बैठक आज

वियना/नयी दिल्ली, 22 जून। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने ईरान के परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमले के मद्देनजर सोमवार को आपात बैठक बुलायी है। आईएईए महानिदेशक राफेल मारियानो ग्रॉसी ने एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, ईरान में गंभीर स्थिति के मद्देनजर कल गवर्नर्स की आपात बैठक बुलायी गयी है। ग्रॉसी ने आगे कहा कि तीन परमाणु स्थलों पर हमले किये गये हैं हालांकि इस समय तक ऑफ-साइट विकिरण के स्तर में कोई वृद्धि नहीं हुई है। ईरान में स्थिति पर आगे का आकलन तब किया जाएगा जब और अधिक जानकारी उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि पिछले नौ दिनों में ईरान पर इजरायल के हमलों के दौरान इस्फ़हान में एक बड़े परमाणु परिसर को दूसरी बार निशाना बनाया गया है, जिसमें कई और इमारतें भी शामिल हैं। इससे पहले आईएईए महानिदेशक ने शनिवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को पेश रिपोर्ट में कहा था कि ईरान में परमाणु स्थलों पर हमले वहां परमाणु सुरक्षा और संरक्षा में भारी गिरावट का कारण बना है।

'तुमने इसे शुरु किया, हम समाप्त करेंगे'

ईरान ने अमेरिका को कड़ी चेतावनी दी, खामेनेई की सुरक्षा और कड़ी की

तेहरान/ यरूशलम, 22 जून। ईरान और इजरायल के बीच जारी संघर्ष में अमेरिका की ओर से उसके तीन परमाणु संयंत्रों पर किए गए हमले से तिलमिलाए ईरान ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है तुमने इसे शुरू किया है, हम समाप्त करेंगें।

- अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि ईरान कई रास्तों से जवाबी कार्यवाही कर सकता है। इसमें होरमुज़ खाड़ी को बंद करना शामिल है।

इन हमलों से पूरी तरह बौखलाए ईरान ने कहा है कि उसे भी अपनी संप्रभुता की रक्षा करने का पूरा अधिकार है और वह इनका पूरी ताकत से जवाब देगा। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि 'ईरान को अपने परमाणु ठिकानों पर हमलों के खिलाफ कार्रवाई करने और मुंह तोड़ जवाब देने का पूरा वैध अधिकार है। उन्होंने अमेरिका पर आरोप लगाया कि उसने संयुक्त राष्ट्र चार्टर, अंतरराष्ट्रीय कानून और परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का खुला उल्लंघन किया है। उन्होंने आगे कहा कि आज सुबह जो कुछ हुआ, वह न सिर्फ निंदनीय है, बल्कि इसके दूरगामी और खतरनाक परिणाम होंगे। संयुक्त राष्ट्र के प्रत्येक सदस्य देश को इनका विरोध करना चाहिए।

अमेरिका के हमले के ईरान की रिवोल्यूशनरी गाड्र्स ने अपने आधिकारिक चैनल पर लिखा,'अब हमारे लिए युद्ध शुरू हो चुका है उन्हें जहां देखो, तबाह कर दो ।'

इन हमलों के बाद ईरान ने अपने सर्वोच्च नेता अयातुल्ली अली खामेनेई की सुरक्षा कड़ी कर दी है और इस तरह की रिपोर्टें है कि वह इस समय किसी अज्ञात बंकर में हैं और उनकी सभी इलेक्ट्रॉनिक संचार सेवा लाइनों को बंद कर दिया गया है। यह कदम इसलिए उठाया गया है ताकि उनका पता नहीं लगाया जा सके और किसी संभावित हमले से बचाया जा सके। सऊदी अरब की परमाणु और रेडियोलॉजिकल नियामक आयोग ने कहा है कि अमेरिका की ओर से ईरान के परमाणु ठिकानों पर किए गए हमले के बाद खाड़ी क्षेत्र में कोई रेडियोएक्टिव असर नहीं पाया गया है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि इन हमलों से यहां और अरब खाड़ी देशों के पर्यावरण पर कोई रेडियोधर्मी प्रभाव नहीं पड़ा है।

पहलगाम आतंकियों को शरण देने वाले दो गिरफ्तार

श्रीनगर, 22 जून। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने जम्मू-कश्मीर में अप्रैल में पर्यटकों पर पहलगाम में हुए आतंकी हमले में एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए आतंकवादियों को शरण देने के आरोपी दो लोगों को गिरफ्तार किया है। ज्ञातव्य है कि इस हमले में 26 पर्यटक मारे गए थे और 16 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

एनआईए ने रविवार को कहा कि पहलगाम के बटकोट निवासी परवेज़ अहमद जोथर और पहलगाम के हिल पार्क निवासी बशीर अहमद जोथर ने हमले में शामिल तीन सशस्त्र आतंकवादियों की पहचान का खुलासा किया है और यह भी पुष्टि की है कि वे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक थे।

- एनआईए ने कहा कि दोनों प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक हैं।

एनआईए के अनुसार परवेज़ और बशीर ने हमले से पहले हिल पार्क में एक मौसमी झोपड़ी में तीन सशस्त्र आतंकवादियों को शरण दी थी। एनआईए ने कहा, दोनों व्यक्तियों ने आतंकवादियों को भोजन, आश्रय और रसद सहायता प्रदान की थी।

एनआईए ने दोनों को गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 की धारा 19 के तहत गिरफ्तार किया है। एनआईए ने कहा कि मामले में आगे की जांच जारी है।

ईरान पर हमले में अमेरिका के 125 लड़ाकू विमान शामिल थे

अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा कि ''ऑपरेशन मिडनाइट हैमर'' ने दिखा दिया कि अमेरिका की धमकी असली होती है

वॉशिंगटन, 22 जून। अमेरिका ने रविवार को तड़के सुबह ईरान के खिलाफ एक बेहद गुप्त और बड़ी सैन्य कार्रवाई की। इस ऑपरेशन का नाम ऑपरेशन मिडनाइट हैमर रखा गया था। पेंटागन के मुताबिक, इस ऑपरेशन में अमेरिका के 125 से ज्यादा लड़ाकू विमान और मिसाइलें शामिल थीं। संयुक्त चीफ ऑफ स्टाफ के प्रमुख जनरल डैन केन ने रविवार को बताया कि यह हमला ईरान के दो प्रमुख परमाणु केंद्रों- फोर्दो और नतांज- पर किया गया। इसके साथ ही इस्फहान शहर में भी मिसाइलें दागी गईं।जनरल डैन केन ने कहा, हमने ईरान के उन ठिकानों को निशाना बनाया जो सीधे उनके परमाणु कार्यक्रम से जुड़े थे। ऑपरेशन को इस तरह अंजाम दिया गया कि आम नागरिकों को नुकसान न पहुंचे।

- अमेरिका के बी-2 स्टैल्थ बमवर्षक विमान मिज़ॉरी से उड़ कर आये थे। हर बमवर्षक ने 30,000 पाउंड वजन के खास बम गिराये।
- अमेरिका ने कहा कि ईरान को 60 दिन शांति व बातचीत का समय देते हैं। इसके बाद ईरान का परमाणु कार्यक्रम नहीं बचेगा।

125 से ज्यादा अमेरिकी विमान शामिल- इनमें बमवर्षक, फाइटर जेट, टैंकर (तेल भरने वाले विमान), और जासूसी विमान शामिल थे। इसमें बी-2 स्टील्थ बमवर्षक विमानों का इस्तेमाल हुआ, जो मिसौरी से उड़कर आए थे। हर बमवर्षक ने 30,000 पाउंड वजन के खास बम गिराए, बंकर-बस्टर बमके तौर पर जाने जाते हैं। ये बम जमीन के भीतर छिपे ठिकानों को नष्ट करने में सक्षम हैं। ये हमला रात 6:40 बजे (पूर्वी समयानुसार) शुरू हुआ और सात बजे तक सभी विमान ईरानी हवाई क्षेत्र से निकल चुके थे। इस मिशन को 9/11 के बाद बी-2 बमवर्षकों की सबसे लंबी उड़ान बताया गया है।

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा, पिछली रात, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेश पर, अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने ईरान के तीन परमाणु प्रतिष्ठानों, फोर्डो, नतांज और इस्फहान पर मध्य रात्रि में सटीक हमला किया, ताकि ईरान के परमाणु कार्यक्रम को नष्ट या गंभीर रूप से कम किया जा सके। यह एक अविश्वसनीय और जबरदस्त सफलता थी। हमारे कमांडर इन चीफ से हमें जो आदेश मिला वह केंद्रित और शक्तिशाली था, और यह स्पष्ट था कि हमने ईरानी परमाणु कार्यक्रम को तबाह कर दिया था। यह ध्यान देने योग्य है कि ऑपरेशन ने ईरानी सैनिकों या ईरानी लोगों को निशाना नहीं बनाया।

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, यह ऑपरेशन राष्ट्रपति ट्रंप की योजना थी – साहसी और शानदार। इसने दुनिया को दिखा दिया कि अब अमेरिका की धमकी असली है। अगर राष्ट्रपति शांति की बात करते हैं, तो वह 60 दिन शांति और बातचीत का समय देते हैं। लेकिन उसके बाद, ईरान का परमाणु कार्यक्रम नहीं बचेगा। पीट हेगसेथ ने बताया कि इस ऑपरेशन की तैयारी में इस्राइल ने भी अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कहा, इस हमले में दिशाभ्रम, धोखे की रणनीति और बहुत ही उच्च स्तरीय ऑपरेशनल सुरक्षा शामिल थी। हमारे बी2 बमवर्षक आए और गए, और दुनिया को भनक तक नहीं लगी। उन्होंने आगे बताया कि इस ऑपरेशन में इतिहास में पहली बार एमओपी जैसे भारी बमों का इस्तेमाल किया गया। इन बमों का वजन करीब 30,000 पाउंड है, जो जमीन के नीचे बने बंकरों को भी तबाह कर सकते हैं।

ईरान के राष्ट्रपति ने मोदी से फोन पर बात की

नई दिल्ली, 22 जून। अमेरिका ने रविवार की सुबह ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर हमला कर दिया। इस हमले के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन से बात की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर इस बारे में जानकारी दी। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, ''हमने मौजूदा स्थिति के बारे में विस्तार से चर्चा की। हाल ही में हुई तनातनी पर गहरी चिंता व्यक्त की। आगे बढ़ ने के लिए तत्काल तनाव कम करने, बातचीत और कूटनीति के लिए अपना आव्हान दोहराया और क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और स्थिरता की जल्द बहाली की बात कही।''

- करीब 45 मिनट के फोन कॉल में उन्होंने मोदी को अमेरिकी हमले तथा मौजूदा स्थिति के बारे में जानकारी दी।

सूत्रों के अनुसार, ईरानी परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमले के मद्देनजर ईरानी राष्ट्रपति पेजेशकियन ने यह कॉल की। राष्ट्रपति पेजेशकियनने प्रधानमंत्री मोदी को मौजूदा स्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। यह कॉल 45 मिनट तक चली। राष्ट्रपति ने भारत को क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ ावा देने वाला मित्र और साझेदार बताया तथा तनाव कम करने, वार्ता और कूटनीति के लिए भारत के रुख और आ ान के लिए प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद दिया। क्षेत्रीय शांति और स्थिरता की बहाली में भारत की आवाज और भूमिका महत्वपूर्ण थी।